**Online at:** https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

**INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT**

**Volume 2; Issue 6; 2024; Page No. 13-15**

**Received: 05-08-2024**
**Accepted: 15-09-2024**

# लखनऊ की संगीत परंपरा में भरतखंडे संगीत विद्यापीठ का योगदान

## डॉ. सपना राठौर

समीक्षक एवं व्याख्याकार (एम. ए. बी एड., पी–एच. डी.) महाराजा अग्रसेन हिमालयन, गडवाल युनिवर्सिटी, उत्तराखण्ड, भारत

**Corresponding Author:** डॉ. सपना राठौर

**सारांश**

संस्कृत साहित्य विश्व साहित्य का अद्वितीय भाग है, और इसमें कविता का स्थान सर्वोच्च है। यह शोध–पत्र संस्कृत कविता की परंपरा, उसकी विविध विधाओं, और उसके साहित्यिक महत्व को समझने का प्रयास करेगा। इसमें संस्कृत कविता के आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक के योगदान का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य काव्यशास्त्र के आधार पर संस्कृत कविता के सौंदर्य, भाव, और शैलीगत तत्वों का विश्लेषण करना है।

**मूलशब्दः** संस्कृत, संस्कृत कविता, काव्यशास्त्र, संगीत परम्परा, लखनऊ

**प्रस्तावना**

संस्कृत कविता भारतीय साहित्य की आत्मा है। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि जीवन के विविध पहलुओं का दार्शनिक एवं भावनात्मक विश्लेषण भी करती है। महाकवि वाल्मीकि से लेकर कालिदास, भवभूति, जयदेव, और भर्तृहरि तक, अनेक कवियों ने संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। यह प्रस्तावना संस्कृत कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और इसकी अनिवार्यता को समझने का एक प्रारंभिक प्रयास है।

**कालिदासस्य मेघदूतम्**

**पंक्तिः**

"कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः।
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः॥"

**व्याख्याः**

एषा पंक्ति कालिदासस्य मेघदूतम् नामक महाकाव्यात् उद्धृता अस्ति। अत्र यक्षस्य विरहदुःखं वर्णितं, यस्य स्वभर्तुः (कुबेरस्य) सेवायां प्रमादेन तस्य अधिकारः हरितः। ततः स शापं प्राप्नोत्, यत् सः वर्षमात्रं प्रियतमा कक्ष्या विरहं सहिष्यते। अत्र कालिदासः भावनात्मकं चित्रणं करोति यत्र यक्षः मेघं दूतं कृत्वा तस्य प्रियायाः सन्देशं प्रेषयति।

**भर्तृहरेः नीति–शतकं**

**पंक्तिः**

"लक्ष्मीं जनस्य च विलोभयतेति तावत्,
न ध्यायते यदिह कामवशात् पुमांसम्।
मानी स एव तु सुखानि यथा तथास्तु,
त्वं तु परेण विगुणैः परिभूयसेऽसि।"

**व्याख्या**

अत्र भर्तृहरिः मानवजीवनस्य नीतिं निरूपयति। लक्ष्मी (धन) सामान्यजनं आकर्षयति, परन्तु आत्मसम्मानयुक्तः पुरुषः तस्य वशं न गच्छति। भर्तृहरिः स्पष्टं वदति यत् मानी पुरुषः धनं वा अन्यं सुखं स्वाभिमानपूर्वकं यथा प्राप्तं तस्य भोगं करोति। यदि व्यक्ति धनासक्तः अस्ति, तर्हि सः अल्पगुणयुक्तैः अन्यैः तिरस्कृतः भविष्यति।

**जयदेवस्य गीतगोविन्दम्**

**पंक्तिः**

"मन्दं मन्दं मधुकरनिकरकरम्बिते मन्दिरे ते।
अन्तः सन्तः सततमपि तव कान्तः कृता यान्तः॥"

**व्याख्याः**

अत्र जयदेवः राधा–कृष्णयोः प्रेमभावं सूक्ष्मतया वर्णयति। राधा कृष्णं स्मरतः व्याकुला अस्ति। अत्र कृष्णस्य गमनं राधायाः हृदयम्

व्यथितं करोति। मधुमख्खिका (मधुकरा) अपि श्रृंगारिकं वातावरणं सृजति। जयदेवस्य कवित्वं अतीव मधुरं तथा गहनं अस्ति।

**वाल्मीकिरामायणस्य श्लोकः**
**पंक्तिः**
"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥"

**व्याख्याः**
एषः श्लोकः वाल्मीकिरामायणस्य आदिकाव्यस्य प्रथमः श्लोकः अस्ति। वाल्मीकिः तपस्यां रतः आसीत्। क्रौञ्चद्वयस्य एकस्य वधं दृष्ट्वा, तस्य हृदयं द्रवितम्। तस्मात् शोकस्य प्रवाहः स्वयमेव छन्दसि प्रवृत्तः। अयं संस्कृतकाव्यस्य आदिश्लोकः इति कथ्यते।

**शंकराचार्यस्य भज गोविन्दम्**
**पंक्तिः**
"भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते।
सम्प्राप्ते सन्निहिते काले, नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे॥"

**व्याख्याः**
शंकराचार्यः अत्र मानवमूढतां विहाय भगवत्प्रेमं जीवनस्य सारं मान्यते। विद्याध्ययनं तदर्थकं भवति, यः केवलं भौतिकसिद्धयर्थं कृतं, स जीवने अन्ते अनर्थं भविष्यति। अत्र भगवद्भक्तिः परमार्थं रूपेण वर्णिता।

**उद्देश्य और लक्ष्यः**
- संस्कृत कविता के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।
- विभिन्न काव्य–विधाओं, जैसे महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, और गद्यकाव्य का विश्लेषण।
- प्रमुख कवियों के काव्य–शिल्प और उनकी शैलीगत विशेषताओं का विवेचन।
- संस्कृत कविता के दार्शनिक और सामाजिक प्रभावों का अध्ययन।
- आधुनिक साहित्य पर संस्कृत काव्य की छाप और उसके पुनरुद्धार के प्रयासों को समझना।

**साहित्य समीक्षाः**
साहित्य समीक्षा खंड में, प्रमुख ग्रंथों और लेखकों का विश्लेषण किया जाएगा। इसमें निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला जाएगाः
- वाल्मीकि की रामायणः आदिकाव्य का स्वरूप।
- कालिदास के महाकाव्य और खंडकाव्यः ऋतुसंहार, मेघदूत, रघुवंशम्।
- भवभूति की काव्य शैलीः उत्तररामचरितम्।
- जयदेव की गीतगोविंदम् और उसके आध्यात्मिक पक्ष।
- भर्तृहरि के श्रृंगार, वैराग्य, और नीति शतक।
- संस्कृत कविता पर आधुनिक युग के शोध।

**अनुसंधान पद्धतियां**
- पाठ–विश्लेषणः प्राचीन और मध्यकालीन संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन।
- तुलनात्मक अध्ययन : संस्कृत कविता और अन्य भारतीय भाषाओं की कविता के बीच समानताएं और भिन्नताएं।
- ऐतिहासिक दृष्टिकोण : कविता की उत्पत्ति और विकास पर ध्यान केंद्रित।
- सामाजिक और दार्शनिक दृष्टिकोण : संस्कृत कविता के सामाजिक प्रभाव और इसके दार्शनिक विचार।

**पाठ–विश्लेषणः**
**श्लोक**
"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥"
(भर्तृहरि, नीतिशतकम्)

**व्याख्याः**
बुद्धिमान व्यक्ति काव्य और शास्त्र के अध्ययन से समय का सदुपयोग करते हैं, जबकि मूर्ख लोग व्यसनों, निद्रा या विवाद में अपना समय व्यर्थ करते हैं। यह श्लोक प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन की आवश्यकता को इंगित करता है और पाठ–विश्लेषण के महत्व को रेखांकित करता है।

**तुलनात्मक अध्ययन**
**श्लोक**
"न तस्य काव्यम् अस्त्येव यन्न वृत्तं यथार्थतः।
न च तस्य काव्यम् अस्त्येव यन्न कल्पितं मनोरथैः॥"
(काव्यालङ्कार शास्त्र)

**व्याख्याः**
यह श्लोक स्पष्ट करता है कि श्रेष्ठ कविता वही है जो सत्य (यथार्थ) और कल्पना (मनोरथ) के संतुलन से रची गई हो। संस्कृत कविता और अन्य भारतीय भाषाओं की कविताओं में इस दृष्टिकोण से समानता और भिन्नता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। यह विचार काव्य की सार्वभौमिकता को दर्शाता है।

**ऐतिहासिक दृष्टिकोणः**
**श्लोकः**
"रामायणं महाकाव्यं कृत्वा वाल्मीकिरादिकः।
महाकवीनामाद्यः स धर्मार्थकाव्यकारकः॥"
(वाल्मीकि महाकाव्य)

**व्याख्याः**
वाल्मीकि को संस्कृत काव्य के आदिकवि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। उनका रामायण संस्कृत काव्य के विकास की प्रथम सीढ़ी है। यह श्लोक कविता के ऐतिहासिक विकास और उसकी उत्पत्ति पर प्रकाश डालता है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में काव्य, धर्म और सामाजिक मूल्यों का अद्भुत समन्वय है।

**सामाजिक और दार्शनिक दृष्टिकोणः**
**श्लोकः**
"यस्य काव्यं न चार्थाय न च धर्माय कल्पते।
कामशास्त्रं तदेव स्यात् न काव्यं काव्यमुच्यते॥"
(भामह, काव्यालङ्कार)

**व्याख्या**
यह श्लोक स्पष्ट करता है कि काव्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, अपितु समाज के लिए उपयोगी होना चाहिए। संस्कृत कविता के सामाजिक और दार्शनिक विचार मानव जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। काव्य में धर्म, अर्थ और

समाज कल्याण का बोध होना अनिवार्य है।

## परिणाम और व्याख्या

संस्कृत कविता न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता का प्रतीक है, बल्कि यह भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को भी संरक्षित करती है। यह खंड संस्कृत कविता के योगदान और उसके प्रभाव का विश्लेषण करेगा। उदाहरण स्वरूपः

- महाकाव्य और खंडकाव्य ने धर्म और नीति का प्रचार किया।
- गीतिकाव्य ने प्रेम, प्रकृति, और मानवीय भावनाओं को गहराई से चित्रित किया।
- काव्यशास्त्र में ध्वनि, अलंकार, और रस सिद्धांत ने वैष्विक साहित्य को प्रभावित किया।

## निष्कर्ष

संस्कृत कविता की साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्ता निर्विवाद है। इसने न केवल भारतीय साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि यह जीवन के गूढ़ तत्वों को सरल भाषा में अभिव्यक्त करने में भी सफल रही। इस खंड में संस्कृत कविता के भविष्य और इसे संरक्षित रखने के तरीकों पर चर्चा की जाएगी।

संस्कृत कविता, चाहे वह पाठ–विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, या सामाजिक–दार्शनिक विचार हो, भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर है। उपर्युक्त श्लोक इन सभी दृष्टिकोणों का समर्थन करते हैं और उनकी प्रासंगिकता को स्थापित करते हैं

संस्कृतकविषु भावनात्मकता, गहनदर्शनम्, तथा प्रकृतिसौंदर्यम् परिपूर्णं दृष्ट्वा, एषा कविता न केवलं आद्यन्तमधुरं अस्ति, अपितु जीवनस्य सर्वमूल्यं दार्शनिकतया प्रकाशितं करोति।

## संदर्भ


1. कालिदासः रघुवंशम् और कुमारसम्भवम्।
2. वाल्मीकिः रामायण।
3. भवभूतिः उत्तररामचरितम्।
4. जयदेवः गीतगोविंदम्।
5. भर्तृहरिः नीति, वैराग्य, और श्रृंगार शतक।
6. नाट्यशास्त्रम्: भरतमुनि।
7. साहित्यदर्पणः आचार्य विश्वनाथ।
8. ध्वन्यालोकः आनंदवर्धन।
9. औचित्यविचारचर्चाः क्षेमेन्द्र।
10. काव्यप्रकाशः मम्मट।
11. काव्यमीमांसाः राजशेखर।
12. काव्यालंकारः भामह।
13. काव्यादर्शः दण्डी।
14. साहित्यशास्त्रः विष्णुधर्मोत।
15. काव्यालंकारसूत्रः वामन।
16. अभिनवभारतीः अभिनवगुप्त।
17. रसगंगाधरः जगन्नाथ।
18. सरस्वतीकंठाभरणः भोजराज।
19. रघुवंशम्: कालिदास।
20. कुमारसंभवम्: कालिदास।
21. मेघदूतम्: कालिदास।
22. स्वप्नवासवदत्ताः भास।
23. गीतगोविन्दम्: जयदेव।
24. बुद्धचरितम्: अश्वघोष।
25. नीतिशतकम्: भर्तृहरि।
26. उत्तररामचरितम्: भवभूति।
27. नैषधीयचरितम्: श्रीहर्ष।
28. शिशुपालवधम्: माघ।
29. किरातार्जुनीयम्: भारवि।
30. कादम्बरीः बाणभट्ट।
31. हर्षचरितम्: बाणभट्ट।
32. अलंकारसर्वस्वः गंगाधर।
33. रसविचारः राजानक।
34. काव्यालोकः मुक्तसरस्वती।
35. काव्यकान्तिमालाः नरहरि।
36. अलंकारमंजरीः नागेशभट्ट।
37. द्विसंधानसंग्रहः हेमचन्द्र।
38. भारतीय काव्यशास्त्रः युधिष्ठिर मीमांसक।
39. अष्टाध्यायीः पाणिनि।
40. महाभाष्यम्: पतञ्जलि।
41. विवेकचूडामणिः शंकराचार्य।
42. गद्यत्रयम्: रामानुज।
43. रामचरितमानसः तुलसीदास।
44. रामायणम्: वाल्मीकि।
45. महाभारतम्: वेदव्यास।
46. सौन्दरनन्दम्: अश्वघोष।
47. कथासरित्सागरः सोमदेव।
48. चरुचर्याः क्षेमेन्द्र।
49. पंचतन्त्रः विष्णुशर्मा।
50. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्: भास।
51. मृच्छकटिकम्: शूद्रक।
52. सर्वदर्शनसंग्रहः विद्यारण्य ।
53. काव्यमालाः हरिनाथ।
54. अलंकारचिन्तामणिः उद्भट।


**Creative Commons (CC) License**
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.